REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

हिंदी कविता का स्वरूप

डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे
अध्यक्ष हिंदी विभाग यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय तुलजापुर जि. उस्मानाबाद.

प्रस्तावना :

हिंदी कविता की शुरुआत आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ हुई है। मानवी समानता के साथ सार्वभौमिक चिंता हिंदी कविता अपने जन्म के प्रारंभ से ही रही है। हिंदी कविता की शुरुवात आम बोलचाल की भाषा से हो गयी है। मानसिक संयम और ईश्वर की उपासना में गाए हुए गीत यही हिंदी कविता का प्रारंभिक बिंदु माना जा सकता है।

सातवीं–आठवीं शताब्दी में नाथ–जैन–सिध्द कवियों की रचनाओं से प्रारंभ होकर जिस काव्यधारा का अजस्त्र प्रवाह आज प्रवाहित हो रहा है उसे ही हिंदी कविता की विकास यात्रा कहा जा सकता है। एक हजार वर्षो से भी अधिक इस काव्यपरंपरा का एक समृध्द और निरंतर विकास का इतिहास रहा है। अध्ययन की सुविधा के लिए साहित्यिक विद्वानों ने

काल और प्रवृत्ति की दृष्टि से काल–विभाजन किए है।

आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेंदु युग से माना जाता है। सन 1850 ई. के आसपास पुरानी काव्यधाराएँ युगीन परिस्थिती में असंगत के रुप में दृष्टिगत हुई। इस युग में राष्ट्रीयता के आवागमन के साधन उपलब्ध होने लगे। जनसंचार के विभिन्न साधनों का विकास हुआ। अंग्रेजी हुकुमत थी । अंग्रेज भारतीय जनता का आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण करने लगे। अंग्रेजी भाषा का लादना और अपने धर्म का प्रसार करना शुरु हो गया । इन सभी परिस्थितियों का प्रभाव हिंदी साहित्य पर रहा है। स्वयं भारतेंदुजी ब्रजभाषा में काव्यरचना करते थे तो भारतेंदुजी ब्रजभाषा से खडीबोली की और हिंदी कविता का ले आने का प्रयास किया। आधुनिक नये विचार और भाव इनकी कविताओं मे दिखायी देता है। देशभक्ति, लोकहित, समाजसुधार, मातृभाषा का उध्दार, बेकारी, अकाल, गरीबी आदि विषयोंपर कविताएँ लिखी। खडीबोली में इन्होनें 'दशरथ विलाप', फुलों का गुच्छा कविताओं की रचना की। इनके अतिरिक्त बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' कृत–जीर्ण जनपद, आनंद अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्ष, मयंक महिमा। प्रतापनारायण मिश्र की 'प्रताप लहरी' जगन्मोहनसिंह कृत –प्रेमसंपत्तिलता, श्यामला, श्यामा सरोजिनी, देवयानी, अन्बिकादत्त व्यासकृत –पावस पचासा, सुकवि सतसई, हो हो होरी, बिहारी–विहार आदि, राधाकृष्णदासकृत – भारत बारहमासा, देश–दशा आदि, नवनीत चतुर्वेदीकृत – कब्जा पचीसी आदि प्रसिध्द कवि आते है।

द्विवेदीजी युग – जागरण सुधार काल (1900–1920)

सन 1900 ई के बाद दो द"ाकों पर आ. महावीरप्रसाद द्विवेदीजी का प्रभाव रहा है। इसीलिए इस युग को द्विवेदी युग कहा जाता है। इन्होने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिंदी कविता को प्रोत्साहित किया।

भारतीय इतिहास में यह समय ब्रिटिश शासन के दमन–चक्र और कूटनीति का काल माना जाता है। भारतेंदुकालीन कवि जहॉ भारत–दुर्दशा पर दुःख प्रकट करके रह गया था वहॉ द्विवेदीकालीन कवि मनीषियों ने देश की दुर्दशा के चित्रण के साथ–साथ देशवासियों को स्वतंत्रता–प्राप्ति की प्रेरणा भी दी थी। उन्हें आत्मोसर्ग एवं बलिदान का मार्ग भी दिखाया ।

आ. महावीरप्रसाद द्विवेदीकृत 'हे कविते', नाथूराम शर्माशंकर कृत 'अनुरागरत्न', शंकर सरोज, गर्भरंडा रहस्य, श्रीधर पाठक – भारतोत्थान, भारत प्रशंसा, जॉर्ज वंदना, अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत प्रियप्रवास आदि, रायदेवीप्रसार पूर्णकृत मृत्युंजय, राम–रावण विरोध, वसंत वियोग आदि, रामचरित उपाध्यायकृत–राष्ट्रभारती, देवदूत, देवसभा, विचित्र विवाह, गयाप्रसाद शुक्ल'सनेही'कृत कृषक–क्रंदन, राष्ट्रीय वीणा, त्रिषुल तरंग, मैथिलीषरण गुप्तकृत – भारत–भारती, रंग में भंग, आदि, रामनरेश त्रिपाठीकृत – मिलन, पथिक, मानसी, आदि। अन्य कवियों के रुप में बालमुकूंद गुप्त, भगवानदीन, अमील अली 'मीर' रुपनारायण पांडेय, गोपालषरण सिंह आदि आते है। इस काल के कवियों में राष्ट्रीयता का स्वर अधिक मुखरित हुआ है।

छायावादी युग की कविता (1918–1938)

इसका काल निर्धारण आ. शुक्ल, डॉ. नगेंद्र के अनुसार सन 1918 से 1938 तक माना जाता है। दो–चार साल आगे पीछे हो सकता है। राष्ट्रीय काव्यधारा के पश्चात ही छायावादी कविता की शुरुवात हो जाती है। यह काल आधुनिक हिंदी कविता का उत्कर्ष का काल माना जाता है। प्रथम विश्वयुध्द के बाद एक नई राजनैतिक चेतना जागी । परतंत्रता से मुक्ति तीव्रता से बदलती हुई परिस्थितियों के कारण हिंदी कविता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। प्रकृति, सौंदर्य को शब्दबध्द करनेवाली नए कवियों की पीढी सामने आयी। सर्वधर्म समन्वय, श्रध्दा, प्रेम छायावाद के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा इस युग के प्रधान कवि है।

प्रसादकृत 'उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, कानन कुसुम, प्रेम पथिक, झरना, ऑसू, लहर आदि पंतकृत 'गिरजे का घण्टा, उच्छवास, वीणा, पल्लव, गुंजन, आदि काव्यसंग्रह, निरालाकृत अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास आदि, महादेवी वर्माकृत 'नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा आदि रचनाऍ प्रसिध्द है। छायावादी युगीन अन्य कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा आदि आते है।

उत्तर छायावादी काव्य –

छायावाद और प्रगतिवाद के बीच उत्तर छायावाद काल आता है। इसमें काव्य की दो धाराऍ प्रवाहित हुई। एक हालावाद और दुसरी राष्ट्रीय काव्यधारा । ये दोनां प्रवाह बाद में प्रगतिवाद काव्यधारा के समांतर भी चलते रहे।

हाला का अर्थ 'मदिरा' है। काव्य में हाला जीवन के नशे के प्रतीक के रुप में होती है। इसके मूल में सूफी दर्शन है। अलौकिक और उन्मुक्त प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए इसका प्रयोग किया। हिंदी में यह प्रवृत्ति हरिवंशराय बच्चनजी की कविताओं में देखी जा सकती है। 'मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश जैसे संकलनों में निराशा, क्षणवाद, अवसरद की अभिव्यक्ति मिलती है।

रामधारीसिंह दिनकर जी को हिंदी कविता में राष्ट्रीय क्रांती का अग्रदूत माना जाता है । राष्ट्रप्रेम अतीत गौरव के साथ क्रांति का आवाहन करनेवाली कविताओं की रचना हुई। इसमें माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि प्रमुख कवि माने जाते है।

प्रगतिवादी युग की कविता (1936–1943)

सन् 1936 के आसपास सामाजिक चेतना को लेकर प्रगतिवादी काव्य का प्रारंभ हुआ । समाज के दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति और आर्थिक शोषण का विरोध इस धारा का मुख्य कारण है। इसका प्रभाव हिंदी काव्य पर भी पडा और हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद का जन्म हुआ। सन 1936 ई. में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हिंदी कविता के लिए बहुत बडी उपलब्धि मानी जाती है। ये मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि कल्पना के पंखोपर उड रहे छायावाद को यथार्थ के कठोर धरातल पर उतारने का काम प्रगतिवादी कविता ने किया ।

इसमें केदारनाथ अग्रवाल, बाबा नागार्जुन, त्रिलोचन शास्त्री प्रमुख कवि रहे है। इनके अतिरिक्त रामविलास शर्मा, शिवमंगलसिंह सुमन, रांगेय राघव, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' भगवतीचरण वर्मा आदि कवि आते है। प्रस्तुत काल में प्रकाशित कृतियों में कुरुक्षेत्र, जयभारत, नकुल, रश्मिरथी आदि प्रमुख है।

प्रयोगवाद –

सन् 1943 के आसपास हिंदी कविता में जो नयी काव्यधारा विकसित हो गयी वह 'प्रयोगवाद' के नाम से अभिहित है। इसका अविर्भाव में तत्कालिन साहित्यिक, सामाजिक परिस्थितियॉ ही कारणीभूत थी। प्रयोगवादी कविता –हासोन्मुख मध्यवर्गीय समाज के जीवन का चित्र है। प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी है। सन् 1943 ई. में 'तारसप्तक' नाम से सात कवियों का एक काव्यसंकलन प्रकाशित हुआ था। बौध्दिकता, लघुता, निराशा, व्यंग्यभाव आदि इसकी विशेषता मानी जाती है। इनमें प्रमुख कवि अज्ञेय, शमशेरबहादुर सिंह, नरेश मेहता, नेमिचंद्र जैन आते है।

नयी कविता –

भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गई कविताओं को नयी कविता कहा जाता है। अज्ञेयकृत 'दुसरा सप्तक' के प्रकाशन से ही इस काव्यधारा का नाम 'नयी कविता' हो गया। सन 1954 ई के बाद की रचनाओं को नयी कविता के नाम से पुकारा गया। दुर्बोधता, निराशा, वैयक्तिकता, कुंठा, छंदहीनता का आक्षेप इस कविता पर भी किए गए। नयी कविता नयी रुचि का प्रतिबिंब बनकर आयी। 'नयी कविता को साधारण मानव की आस्था अनास्था का चित्र कहा जाता है। नयी कविता ने अपनी विषय वस्तु को साधारण जन जीवन से लेकर महानगरों के वैविध्यमयी जीवन से जोडा है। इसमें मानव की सम्पूर्ण शक्ति और आस्था विश्वास को संजोने की कोशिश की गई।'[1] देश की सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, आर्थिक, परिस्थिती एवं उपलब्धियों की प्रेरणा का प्रभाव नई कविता पर पडा है। इसमें विभिन्न प्रयोग और परिवर्तन दिखायी देते है। मानवतावादी, कथ्य की व्यापकता, दृष्टि की इसकी विशेषता मानी जाती है। अज्ञेय, गिरीजाकुमार माथुर, मुक्तिबोध, भवानीप्रसाद मिश्र, शमशेरबहादुरसिंह, धर्मवीर भारती आदि कवि आते है।

साठोत्तरी और समसामायिक कविता –

साठोत्तरी कविता 'नयी कविता' की अगली कडी है। इसमें यथार्थ का तकाजा अधिक तीव्र दिखायी देता है। स्वतंत्रप्राप्ति के बाद जो सपने देखे थे वे टूट गए थे। प्रजातंत्र से उसका मोहभंग हो गया था। देश की आबादी बढती जा रही थी। इसके साथ ही बरोजगारी भी। समाजवाद का सपना पूंजीपतियों के बढते वर्चस्व ने तोड दिया था। सामाजिक विघटन के लक्षण दिखाई देने लगे थे। घुटन, संत्रास, आवेश, मूल्यहीनता के दायरे बढने लगे थे। साठोत्तरी काल की सबसे बडी अनुभूति मोहभंग की थी। साठोत्तर कविता में कविता के 'किसम किसम' के आंदोलन चले। अर्थात् अनेक काव्यांदोलन चल पडे। उनमे अकविता आंदोलन महत्वपूर्ण माना जाता है। नयी कविता की रुमानियत और मध्यवर्गीय मर्यादाओं को तोडने के लिए जगदीष चतुर्वेदी, श्याम परमार, कैलाष वाजपेयी आदि ने प्रारंभ किया। अकविता के रुप में व्यापक असंतोष, निराशा, अनास्था, घुटन को व्यक्त करते है। विद्रोह और अस्वीकार की आवाज थी। इसके पीछे कोई विचारधारा नहीं थी। इसी दौरान राजकमल चौधरी कृत मुक्तीप्रसंग और सौमित्र मोहन कृत 'लुकमान अली' कविताओं की काफी चर्चा रही है।

अकविता के अतिरिक्त श्रीकांत वर्मा की कविता में त्रासदी, भयावहता, आतंक बहुल मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त होती है । जनवादी चेतना विकसित करनेवाले कवियों में सबसे पहले धूमिल का नाम आता है। इनका साठोत्तरी कवियों मे बहुत महत्वपूर्ण नाम है। धूमिलकृत 'ससंद से सडक तक' आदि रचना प्रमुख हैं इनके अतिरिक्त, दुष्यंतकुमार, लीलाधर जगूडी, कुमार विकल आदि कवियों का नाम आता हैं । इन कवियों ने युवा और वाम कविता को दायित्वबोध के साथ जनसंघर्ष की प्रेरणा से भर दिया ।

समसामायिक कविता –

आधुनिक हिंदी कविता को संघर्ष और विद्रोह की परंपरा की कविता कहा जाता है। इनकी विचारधारा जनजीवन से जुडी है। समाज में नैतिक मूल्य नष्ट हो रहे है। सांप्रदायिक झगडे है । रिश्वतखोरी में बढोत्तरी हो

गयी है। विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक समस्या है। इनके प्रति जागरुकता कवि मुक्तिबोध, अरुण कमल, राजेश जोशी, मंगलेश डबराल, उदयप्रकाश, सुदीप बैनर्जी, असद जैदी, नरेश सक्सेना, विजयकुमार आदि महत्वपूर्ण कवि आते है।

आधुनिक हिंदी कविता का समसामायिक परिदृश्य समृध्द और व्यापक है।

कविता के समकालीन सरोकार –

1. दलित कविता –

दलित वर्ग पिछडी जातियों के लिए दी हुई संज्ञा है। हिंदू उच्चवर्गीय जातियों ने उन्हे बहिष्कृत किया था, ग्रामव्यवस्था से बाहर रखा, जिनपर सदियों से अन्याय अत्याचार किए गए। मनुष्य के रुप मे जीने का अधिकार जिनसे छीन लिया गया वे सभी लोक 'दलित' है। उनकी अपनी उप–संस्कृति में जिनका जन्म हुआ और इस उपसंस्कृति को सभी बारीकियों के साथ जानते है वे दलित जिस साहित्य की रचना करते है वह 'दलित साहित्य' हैं। दलित साहित्य भारत के सभी भाषाओं में लिखा जा रहा है। मराठी भाषा में इसका जन्म हुआ।

हिंदी में दलित कविता की शुरुवात सन 1970 के बाद ही हुई। इसके पूर्वकाल में भी थोडा–बहूत दलितों की रचनाएँ मिलती है। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में डोम जाती के बिहारी कवि हीरा डोम हुए थे।

वर्तमान युग में जिन दलित कवियों की चर्चा है इनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि, धर्मवीर, जयंत परमार, जयप्रकाश कर्दम, कंवल भारती के नाम आता है। इन कवियों ने अपने कविताओं के माध्यम से अलग पहचान बनाई।

2. आदिवासी कविता –

जनजातियों के लोगों द्वारा निर्मित कविता को 'आदिवासी कविता' कहा जाता है। दलित कविता की प्रेरणा से आदिवासी कविताओं ने अपने सैध्दांतिक भूमिका प्रस्तुत की है। आदिवासी शब्द का प्रयोग जंगलो में या विशिष्ट भूप्रदेशों में रहनेवाले जनजातियों के लिए किया जात है । इस पर भारत की सभी भाषाओं मे रचनाएं हो रही है। हिंदी आदिवासी कविता के कवियों में हरिराम मीणा, ग्रेस कुजुर, शंकरलाल मीणा, महादेव टोप्पो, डॉ. रामदयाल मुंडा, मीरा रामनिवास, सहदेव सोरी आदि कई कवियों की कविताएँ प्रसिध्द तथा चर्चा में रही है।

3. स्त्रीवादी कविता –

स्त्रीवादी कविता स्त्रियों के अस्तित्वविषयक सवालों का तथा अधिकारों का शब्दाकंन है। स्त्रियोंद्वारा निर्मित आदिम साहित्य से आज तक के साहित्य में दिखायी देता है। परंतु साहित्य अलग–अलग धाराओं में स्त्रियों की विभीन्न समस्याएँ अधिक गंभीर रुप से, गहराइयों के साथ अभिव्यक्ति आधुनिक काल में देखा जा सकता है।

स्त्रीवादी साहित्य में हिंदी लेखिकाओं की रुचि बढती जा रही है। रचना की दृष्टि से इनमें हिंदी कवियित्रीयों का योगदान महत्वपूर्ण माना गया है। उन कवियित्रीयों में कात्यायनी, गगन गिल, चंपा वैद, अनामिका, तेजी ग्रोवर, प्रगति सक्सेना का उल्लेख किया जा सकता है।

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि हिंदी कविता ने अपनी सुदीर्घ तथा बहुआयामी विकास–यात्रा के विभिन्न स्तरों को पार करते हुए अपने सामाजिक दायित्वों का सफलतापूर्वक निभाया है। आज आधुनिकता बोध के साथ–साथ उसका सामाजिक क्षितीज व्यापक बनता जा रहा है।

संदर्भ संकेत :

1. डॉ. बन्नाळीकर मनोहर, नयी कविता हिंदी–मराठी, पृ. 95